51

युद्ध, जो न कभी था और न होगा

(16:13, 14, 16-21)

गरजती तोपें, बरसते बम, बारूद और मौत की गन्ध से भरा वातावरण, बड़े-बड़े शत्रु, हमले और उनके जवाब, पहले एक पक्ष का जीतना और फिर दूसरे का, बहुत से लोग ''आरमगिद्दोन की लड़ाई'' को ऐसे ही देखते हैं। मुझ पर अति कल्पनाशील होने का आरोप लगता है, परन्तु इस ''लड़ाई'' में दिखाई गई कल्पना के सामने मेरी कल्पना कुछ भी नहीं।

''आरमगिद्दोन की लड़ाई'' की धारणा इतनी प्रसिद्ध है और वह इतने अधिक लोगों को प्रभावित करती है कि मुझे वह बात जो मैं कह रहा हूं, अफसोस के साथ कहनी पड़ती है, परन्तु कहना आवश्यक है कि *अरमगिद्दोन की लड़ाई कोई लड़ाई ही नहीं है*। ''लड़ाई'' शब्द की किसी भी आमतौर पर स्वीकार की जाने वाली परिभाषा से आरमगिद्दोन की कोई लड़ाई नहीं मिलेगी। प्रकाशितवाक्य 16 वाले दर्शन में भी आरमगिद्दोन की कोई लड़ाई नहीं हुई। मैं जानता हूं कि इससे आप निराश हो जाएंगे, परन्तु मेरे साथ बने रहें। मुझे अभी अपनी बात को प्रमाणित करना है। मुझे यह भी बताना है कि प्रकाशितवाक्य 16:13-16 में प्रभु *वास्तव* में क्या बताना चाहता है। (''अच्छे लोगों'' और ''बुरे लोगों'' के बीच वैश्विक लड़ाई की भविष्यवाणी से बढ़कर उसका और महत्वपूर्ण लक्ष्य है।)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक विचाराधीन लड़ाई का तीन बार उल्लेख करती है: 16:14; 19:19; और 20:8 में।[1] अंग्रेज़ी में उन आयतों में कई शब्दों का इस्तेमाल हुआ है, परन्तु यूनानी में तीनों आयतों में एक ही वाक्यांश *ton polemon* का जिसका मूल अर्थ ''लड़ाई'' (या ''युद्ध'') है।[2] निश्चयात्मक उपपद का इस्तेमाल[3] केवल एक ही लड़ाई का संकेत देता है, जिसे तीन अलग-अलग पहलुओं से देखा गया है। ब्रायन वाट्स से मैंने तीनों आयतों को अलग-अलग दिखाने के लिए इस्तेमाल करने वाले मूल दृश्य बनाने के लिए कहा। फिर मैंने उसे अध्ययन किए जा रहे विशेष दर्शन से मेल खाते विवरणों को अलग करने के लिए कहा। (पिछले पाठ में ''सातवां कटोरा''[4] और इस पाठ में '''लड़ाई' का दूसरा विवरण'' और '''लड़ाई' का तीसरा विवरण'' में तुलना करें तो आपको समझ आ जाएगा कि मेरे कहने का क्या अर्थ है।) कला के कार्य के लिए हो सकता है कि यह बेहतरीन ढंग न हो, परन्तु उम्मीद है कि इससे इस सच्चाई पर ज़ोर दिया जा सकता है कि

प्रकाशितवाक्य केवल *एक ही* निर्णायक ''लड़ाई'' के विषय में बताता है।

''लड़ाई'' का पूरा विवरण अध्याय 19 में मिलता है, सो मैं विस्तार से उस अध्याय पर चर्चा करने तक प्रतीक्षा करूंगा। परन्तु लोगों ने ''अरमगिद्दोन'' शब्द को ''लड़ाई'' से जोड़ दिया है (बेशक जहां तक शब्द की बात है, इसे ''आरमगिद्दोन की लड़ाई'' ही कहा जाएगा), हमें अपने अध्ययन में यहां पर कुछ समय बिताना आवश्यक है।

16:13-16 में सफ़र करते हुए आप मेरे साथ रहें। अन्त में हम ''मगिद्दो पहाड़'' अर्थात अरमगिद्दोन पर पहुंच जाएंगे।

असंगत भाग लेने वाले (16:13, 14क)

''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' का कथित विवरण नाटक के लघु पात्रों[5] से शुरू होता है: ''और मैंने उस अजगर के मुंह से,[6] और उस पशु के मुंह से और उस झूठे भविष्यवक्ता के मुंह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा''[7] (आयत 13)।

यूहन्ना ने अजगर (12:3, 4), पशु (13:1, 2), और झूठे भविष्यवक्ता को इकट्ठे होते देखा। यह ''झूठा भविष्यवक्ता'' शब्द का पहला इस्तेमाल है; परन्तु जैसा कि पहले ध्यान दिया गया था कि यह 13:11 वाला पृथ्वी का पशु था। 13:12-17 वाले पृथ्वी के पशु की गतिविधि की तुलना 19:20 वाले झूठे भविष्यवक्ता के विवरण से करें: ''झूठा भविष्यवक्ता ... जिसने [पशु के] सामने ऐसे चिह्न दिखाए थे, जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया, जिन पर उस पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे।''

जब यह प्रेरित देख रहा था, तो उसने तीनों अपवित्रों के मुंह से ''तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में'' निकलते देखा। आयत 14 में इन ''अशुद्ध आत्माओं'' को ''दुष्ट आत्माएं'' कहा गया है। स्पष्टतया वे मिल-जुल कर रहने वाले प्राणी नहीं थे। ''अशुद्ध आत्मा'' शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा निकाले जाने वाले दुष्टात्माओं के वर्णन के लिए सुसमाचार के वृत्तांतों में किया गया है (मरकुस 9:25; लूका 9:42)। इन आत्माओं को ''मेंढकों जैसी'' क्यों कहा गया है?[8] कुछ टीकाकार ''अशुद्ध'' शब्द पर ज़ोर देते हैं, क्योंकि मूसा की व्यवस्था में मेंढक ''अशुद्ध'' प्राणी थे, जिन्हें इस्राएली खा नहीं सकते थे (देखें लैव्यव्यवस्था 11:1-12)।[9] अन्य लेखक प्रकाशितवाक्य 16 में इस्तेमाल की गई निर्गमन की विस्तृत भाषा की ओर ध्यान दिलाते हैं और इन मेंढकों का सम्बन्ध मिस्र पर मेंढकों की विपत्ति से जोड़ते हैं (निर्गमन 8:1-15)। यह हो सकता है (सम्भव है), परन्तु मिस्र वाले मेंढक एक बहुत बड़ा कष्ट थे, जबकि प्रकाशितवाक्य वाले मेंढकों का उद्देश्य उससे खतरनाक था।[10]

मुझे नहीं लगता कि मेंढक के रूपक के इस्तेमाल में पवित्र आत्मा का कोई संकेत हो; मेंढकों को कुरूपता और घिनौनेपन में सबसे अधिक नम्बर मिलते हैं, परन्तु क्या वे सचमुच वेस्ट प्वाइंट सामग्री हैं भी?[11] कर्नल करमिट[12] सेनापति हरे और कैप्टन टांय-टांय की अगुआई वाली सेना में सेवा करने पर आपको कैसा लगेगा।

मेंढक प्रेमियों से मैं पहले ही क्षमा मांग लेता हूं, परन्तु जहां तक मैं देख सकता हूं

मेंढकों जैसे बेकार प्राणी कुछ ही और होंगे।[13] और मेंढक पैदा करने के अलावा कभी मेंढकों ने और काम क्या किया है? जहां तक उनकी सैनिक वीरता की बात है, मुझे ठंडे, चिपचिपे और घृणाजनक जीव *पसन्द* नहीं हैं, पर मैं उनसे *डरता* नहीं हूं।

जब ब्रायन तीन अशुद्ध आत्माओं का चित्र बनाने को तैयार हो गया तो मैंने उससे तीन घटिया से, भद्दे लगने वाले मेंढकों का चित्र बनाने को कहा जिनके हाथ में हथियार हों और वे पृथ्वी के राजाओं की भर्ती करने को तैयार हों। उसने उन्हें हर सम्भव घटिया और बेढंगा बनाया, परन्तु वे तो अभी भी हास्यास्पद लगते हैं, हैं कि नहीं?

पहला संकेत कि अजगर और उसके साथियों द्वारा बनाई गई योजना वाली लड़ाई का विनाश होगा, क्योंकि दुष्ट त्रिएकता भर्ती होने वालों और अगुवों के रूप में मेंढकों का जमावड़ा ही कर पाई।

बेकार योजना (16:14ख)

दूसरा संकेत कि उनका सैनिक अभियान एक असफलता होने वाला था। इस बात में था कि तीनों मेंढक युद्ध की एक बेकार योजना लेकर आए। आयत 14 जो उस युद्ध की योजना के बारे में बताती है, का आरम्भ मेंढकों के विवरण से होता है: ''ये चिह्न दिखाने वाली दुष्टात्माएं हैं''[14] (16:14क)। ''चिह्न'' सम्भवतया झूठे भविष्यवक्ता द्वारा किए गए ''छद्म आश्चर्यकर्म'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:9; KJV) थे।[15]

मेंढकों जैसी आत्माएं ''सारे संसार के राजाओं के पास निकल'' गईं (आयत 14ख)।[16] मैं उन्हें उछलते हुए, बाज़ियां मारते और जादू करते, ''राजाओं के कानों में, जो उनकी सुनते थे अपने स्वामियों की महानता की'' टर्र-टर्र करते देख सकता हूं।[17] उनकी योजना ''[राजाओं और उनके शत्रुओं को] सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के लिए इकट्ठा'' करने की थी (16:14ग)। ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन'' वाक्यांश को रेखांकित कर लें। लियोन मौरिस ने लिखा है:

> अन्तिम दिन का यह सबसे मुखरित विवरण है। *बड़ा* इसे छोटे दिनों से अलग करता है। और यह मनुष्य का नहीं *परमेश्वर* का दिन है। ... यह ईश्वरीय उद्देश्य के चरम से जुड़ा है। और *सर्वशक्तिमान* हमें यह स्मरण दिलाता है कि पूरी पृथ्वी की शक्ति के सामने परमेश्वर की सामर्थ बड़ी है।[18]

जिम मैक्गुइगन के विचार में ये आत्माएं अशुद्ध ही नहीं, बल्कि ''नासमझ भी'' थीं।[19] जो कुछ भी उन्होंने किया वह परमेश्वर की योजनाओं के अनुरूप था। (अगले पाठ में यह पता चलेगा कि पृथ्वी के राजाओं के सम्बन्ध में ''परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा'' [17:17क]।)

शैतानी लड़ाई की योजना का अन्त आरम्भ से ही तय था।[20] मेंढक शोर मचाने के लिए अच्छे हैं, परन्तु इससे बढ़कर नहीं। इस अवसर पर उन्होंने बहुत शोर-गुल मचाया, परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं निकला।

अनुपयुक्त जगह (16:16)

अन्तिम और सबसे महत्वपूर्ण संकेत की लड़ाई का अन्त हो गया, आयत 16 में मिलता है: ''और उन्होंने उन्हें उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है।'' अन्त में हम अरमगिद्दोन पर आ ही गए।

आपने ध्यान दिया होगा कि नाम के अक्षरों पर कुछ संदेह है। कुछ हस्तलिपियों में नाम के पहले ''अ'' पर आसानी से बोला जाने वाला चिह्न[21] है (जो उच्चारण को प्रभावित नहीं करता) और इस कारण इसे ''अरमगिद्दोन'' पढ़ा जाता है। कई हस्तलिपियों में ''अ'' के ऊपर कठिनाई से बोला जाने वाला चिह्न है (जो ''ह'' की आवाज़ देता है), जिस कारण उसे ''हर-मगिदोन'' पढ़ा जाता है।

शब्द के अर्थ पर भी सवाल है।[22] ''अरमगिद्दोन'' (बिना रुके) के ''मगिद्दो नगर'' सहित कई अर्थ हो सकते हैं। अधिकतर विद्वानों का मत है कि ''हर-मगिदोन'' सही शब्द है। *हर* ''पहाड़'' के लिए इब्रानी शब्द है, जिस कारण वे निष्कर्ष निकालते हैं कि इस नाम का अर्थ ''मगिद्दो पहाड़'' है।

मगिद्दो पर कई आरम्भिक टिप्पणियां उपयुक्त हैं। पुराने नियम में मगिद्दो[23] का उल्लेख ग्यारह बार आया है। यह यरूशलेम से साठ मील उत्तर और गलील की झील के पच्चीस मील दक्षिण पश्चिम की ओर उत्तरी पलिश्तीन का एक नगर था। मगिद्दो से उत्तर पूर्व की ओर फैला हुआ बड़ा मैदानी इलाका लगभग चौदह मील चौड़ा और बीस मील लम्बा था। इस विशाल खुले क्षेत्र में यिज्रेल (एसड्रेलॉन) घाटी सहित कई प्रसिद्ध जगहें थीं।

मगिद्दो ''का बहुत कूटनीतिक महत्व था, क्योंकि यह शारोन और एस्ड्रेलॉन के मैदानों के बीच पहाड़ों में से होकर जाता था।''[24] वहां पर हमलावरों का सामना किया जाता था। मगिद्दो के निकट मैदानों में सैकडों निर्णायक लड़ाइयां लड़ी गई थीं। एक इतिहासकार ने लिखा है, ''मगिद्दो के आस-पास ... इन निचली पहाड़ियों ने एस्ड्रेलॉन के मैदान के ऊपर से संसार के किसी भी क्षेत्र से अधिक खूनी मुकाबले देखें होंगे।''[25] इस क्षेत्र में गिदोन और उसके तीन सौ लोगों ने मिद्यानियों को हराया था (न्यायियों 7:1-22), राजा शाऊल पलिश्तिनियों से हारा था (1 शमूएल 31:1-6) और राजा अहज्याह यहीं पर येहू के तीरों से मरा था (2 राजा 9:27)।

मगिद्दो में लड़ी गई कई लड़ाइयों में से यहूदियों के लिए दो का विशेष महत्व था, जिनमें एक ''मगिद्दो के सोतों के पास'' (न्यायियों 5:19) कनानी राजा याबीन पर बाराक और दबोरा की बड़ी विजय थी (न्यायियों 4; 5)। दूसरी लड़ाई फिरौन-नको के साथ थी, जिसमें योशिय्याह राजा घायल होकर मर गया था (2 राजा 23:29, 30; 2 इतिहास 35:22-24)। ''इन घटनाओं का अन्त यहूदियों की याद में बस गया और मगिद्दो घाटी में योशिय्याह के लिए बहुत देर तक शोक को कौमी शोक के विशेष उदाहरण के रूप में दोहराया जाता था [जकर्याह 12:11]।''[26]

इससे आपको मगिद्दो पर कुछ पृष्ठभूमि मिल जाती है, परन्तु ''मगिद्दो *पहाड़*'' क्या है? एल्बर्ट बाल्डिंगर ने लिखा है, ''प्राचीन पलिश्तीन का मानचित्र खोलें और आरमगिद्दोन

ढूंढें। यह आसानी से नहीं मिलता; सच तो यह है कि आप इसे ढूंढ़ ही नहीं सकते। यह वहां नहीं है।''[27] विद्वान लोग आमतौर पर सहमत होते हैं कि ग्लोब पर मगिद्दो पहाड़ नाम की कोई जगह नहीं है।

> बाइबल ''मगिद्दो और इसके तीन ऊंचे स्थानों'' (यहोशू 17:11), ''मगिद्दो और इसके नगरों'' (न्यायियों 1:27), ''मगिद्दो के सोतों'' (न्यायियों 5:19), और ''मगिद्दो की तराई'' (2 इतिहास 35:22; जकर्याह 12:11) की भौगोलिक स्थिति बताती है, परन्तु मगिद्दो पहाड़ का कोई उल्लेख नहीं करती।[28]

यह टीकाकारों को उलझा देता है:

> समस्या यह है कि मगिद्दो पहाड़ नहीं है, बल्कि गलील और भूमध्य सागर के बीच का मैदान[29] है, जो यिज्रेल (एस्ड्रेलॉन) तराई का भाग है।[30]
>
> ... यहां कठिनाई होती है कि मगिद्दो पहाड़ ही नहीं है।[31]
>
> ... अफसोस की बात है कि ''मगिद्दो पहाड़'' नाम का कोई पहाड़ नहीं मिलता।[32]
>
> यह छोटा-सा नगर इस्राएल में एस्ड्रेलॉन के मैदान में है और इसमें कोई पहाड़ नहीं है।[33]
>
> परन्तु मगिद्दो के निकट कोई पहाड़ नहीं है, ...[34]

कुछ लोग, उस सामान्य क्षेत्र में जो इससे मेल खाता हो सकता है, किसी स्वाभाविक भविष्य के साथ ''मगिद्दो पहाड़'' का लेबल जान-बूझकर लगाकर इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करते हैं। एक आसान हल यह मान लेना है कि ऐसी कोई जगह नहीं है और यह कि पवित्र आत्मा का उद्देश्य किसी विशेष भौगोलिक जगह की ओर ध्यान दिलाना नहीं, बल्कि *अवधारणा* को समझाना था।[35]

यह अवधारणा क्या हो सकती है? मगिद्दो लड़ाई के मैदान के रूप में प्रसिद्ध था इसलिए शैतान और उसके साथियों द्वारा किए जाने वाले आत्मिक युद्ध के सम्बन्ध में मगिद्दो पहाड़ उपयुक्त शब्द है। इसके अलावा मगिद्दो की लड़ाइयों के कारण असंख्य आंसू बहे थे। शैतान के विद्रोह से मन की पीड़ा ही होती है, जिस कारण हर-मगिदोन भी त्रासदी के बोध का संदेश देने के लिए उपयुक्त है।

ऊपर दी गई बात है तो सच, परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण अवधारणा शायद इसके संकेत में मिलती है। पहले दिए गए पुराने नियम के उदाहरणों पर ध्यान से गौर करें: *हर मामले में जिनके काम परमेश्वर की स्वीकृति से मेल खाते थे, वे युद्ध जीत गए; जिनके काम परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध थे, वे हार गए।* दिए गए अधिकतर उदाहरणों में यह स्पष्ट है; परन्तु योशिय्याह के मामले में जो अधिकतर अच्छा राजा ही था, हो सकता है कि यह उतना स्पष्ट न हो। 2 इतिहास 35:20-25 के विवरण पर विशेष ध्यान दें। फिरौन नको ने योशिय्याह से लड़ाई में भाग न लेने की याचना की, परन्तु योशिय्याह ने ''उन वचनों को न

माना जो उसने परमेश्वर की ओर से कहे थे, और *मगिद्दो की तराई में* उससे युद्ध करने को गया'' (2 इतिहास 35:22)। ''मगिद्दो की तराई में युद्ध करने'' जाने वाले, ''परमेश्वर की ओर से कहे'' वचनों को न मानने वाले हारेंगे ही। क्या हम प्रकाशितवाक्य 16:14, 16 में इकट्ठी हुई दुष्ट शक्तियों के साथ यह प्रासंगिकता बना सकते हैं? वे (1) सर्वशक्तिमान के विरुद्ध विद्राही थीं और (2) ''उस जगह जिसे इब्रानी में हर-मगिदोन कहा जाता है'' थीं। इस कारण यह पक्का था कि वे लड़ाई हारेंगे!

जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था, मेंढकों ने अपनी सेना वहां इकट्ठी की, *जहां उनके लिए जीतना असम्भव था,* जहां उनके नाश का आरम्भ था!

अपरिहार्य दण्ड (16:17-21)

जब अकुशल लोग बेकार योजना पर काम करें और उन्हें अनुपयुक्त स्थान पर भेजा जाए तो उसके विनाश और पराजय की भविष्यवाणी करना कठिन नहीं है:

> और सातवें ने अपना कटोरा हवा पर उण्डेल दिया, और मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ, कि ''हो चुका।'' फिर बिजलियां, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुईंडोल कभी न हुआ था। ... और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया; और पहाड़ों का पता न लगा। और आकाश से मनुष्यों पर मन-मन भर के बड़े ओले गिरे, ... (16:17-21)।

बर्टन कॉफमैन ने लिखा है, ''ध्यान दें कि यहां बताई गई किसी प्रकार की कोई 'लड़ाई' नहीं थी।''[36] जेम्स एफर्ड ने ऐसा ही अवलोकन किया है:

> इस कटोरे के चक्र में अरमगिद्दोन के विवरण का दिलचस्प पहलू यह है कि कोई लड़ाई हुई ही नहीं, वे लड़ाई के लिए इकट्ठा होते हैं, परन्तु परमेश्वर हस्तक्षेप करके (अति अपोकलिप्टिक रूप में) बिना लड़ाई के परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं को नष्ट कर देता है।[37]

मूलवादियों के नाटकीय दृश्यों के विपरीत लड़ाई के मैदान के दोनों ओर से किसी मानवीय सेना ने एक-दूसरे का सामना नहीं किया, और न ही कोई गोली चली थी। इसके बजाय दुष्ट सेनाओं के इकट्ठी हो जाने पर परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उन पर उसका क्रोध पड़ा, जो गर्ज, भूकम्प और ओलों के रूप में था। पूरा मामला दोबारा आरम्भ होने से पहले ही खत्म हो गया था।

''लड़ाई'' के दो अन्य भागों के आगे की झलक देखें तो आप पाएंगे कि हर विवरण में यही ढंग था: अध्याय 19 में यूहन्ना ने कहा, ''फिर मैंने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार [यीशु] और उसकी सेना से लड़ने के लिए इकट्ठे देखा'' (आयत 19)। परन्तु लड़ाई का कोई विवरण नहीं दिया गया है। इसके बजाय

झूठे नबी के साथ ''वह पशु पकड़ा गया'' था और दोनों को आग की झील में डाल दिया गया था (आयत 20) जबकि उनके पीछे चलने वाले पक्षियों का आहार बन गए थे (आयत 21; आयतें 17, 18 भी देखे) ।

अध्याय 20 में शैतान ''जातियों को ... भरमाकर लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकला'' (आयत 8क), परन्तु जैसे ही शैतान की भर्ती पवित्र लोगों के डेरे के आस-पास होने लगी ''आग ने स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म कर'' दिया (आयत 9ख), और ''शैतान आग और गन्धक की उस झील में, ...'' डाल दिया गया (आयत 10क)। लड़ाई हुई ही नहीं।

आस-पास के शोर का जोखिम उठाते हुए, मैं फिर कहता हूं, '''अरमगिद्दोन की लड़ाई' हुई ही नहीं।''[38]

होमेर हेली ने लिखा है, ''किसी समय भविष्य में उत्तरी पलिश्तीन में मानवीय सेनाओं के बीच लड़ी जाने वाली सांसारिक सैनिक लड़ाई की ओर देखना पूरी तरह से वचन के समर्थन के बिना है और प्रकाशितवाक्य की आत्मा और उद्देश्य से बाहर है।''[39] कॉफ़मैन इस बात से सहमत थे कि ''किसी सांसारिक युद्ध भूमि पर बहुत बड़े युद्ध के प्रदर्शन के रूप में कथित 'अरमगिद्दोन की लड़ाई' की अवधारणा पूरी तरह से असंगत, तर्क विरुद्ध और मसीह की पूरी शिक्षा के विपरीत है।''[40] रेअ समर्स ने जोड़ा है, ''यदि कोई इससे वैसे ही, भौतिक लड़ाई की उम्मीद करता है, तो उसे तीन मेंढकों की सभा की अगुआई में लड़ने वाली सेना की उम्मीद करनी चाहिए।''[41]

रूबल शैली ने पूछा, ''अपने समय के उन्नीस या बीस सदियों बाद लड़ी जाने वाली किसी लड़ाई की अस्पष्ट खबर सुनकर पहली शताब्दी के मसीही लोगों को क्या सांत्वना, आश्वासन और प्रोत्साहन मिलना था ?''[42] इसका स्पष्ट उत्तर है कि ''कोई नहीं।'' यूहन्ना के पाठकों के लिए यह जानना आवश्यक था कि *उनके* शत्रु *प्रभु* से हार जाएंगे और प्रकाशितवाक्य 16 में उन्हें *यही* आश्वासन दिया गया है।[43]

सारांश

यदि आप परमेश्वर की विश्वास योग्य संतान हैं तो आपको कथित ''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' से डरने की कोई आवश्यकता नहीं। उस लड़ाई को प्रभु स्वयं देख लेगा।

दूसरी ओर ऐसी एक लड़ाई है, जिसके लिए आपको चिंतित होना *चाहिए*: ''... यह मल्लयुद्ध, ... प्रधानों से और अधिकारों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)।[44] यह लड़ाई ''गोली और बारूद की'' नहीं, बल्कि ''प्राण और आत्मा की'' है।[45] यह ''मानवीय हृदय की युद्ध भूमि पर लड़ी जाने वाली'' लड़ाई है।[46] (देखें रोमियों 7:21.) यह हर रोज़ लड़ी जाने वाली लड़ाई है, जिसमें हम यह चुनते हैं कि किस की उपासना करें (यहोशू 24:15)। परन्तु यह वह लड़ाई है, जिसे हम अपने पक्ष में परमेश्वर के साथ जीत सकते हैं:[47] ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का वैकल्पिक शीर्षक ''अरमगिद्दोन की गैर लड़ाई'' या केवल ''अरमगिद्दोन'' हो सकता है! यदि आप निजी प्रासंगिकता से संदेश देना चाहें तो आप ''लड़ाई, जिसकी आपको चिंता करने की आश्यकता नहीं है और जिसकी आपको चिंता करनी चाहिए'' पर बोल सकते हैं। पाठ का पहला भाग ''अरमगिद्दोन की लड़ाई'' पर और दूसरा भाग निजी मन की लड़ाई पर लगाएं। वेस्ट[48] और बाल्डिंगर[49] ने मन की लड़ाई पर बहुत अच्छा लिखा है।

टिप्पणियां

[1]सतत-ऐतिहासिक ढंग का इस्तेमाल करने वाले आमतौर पर इन तीन लड़ाइयों की व्याख्या तीन अलग-अलग रूपों में करते हैं, जो इतिहास में हो चुकी हैं। आज इस शिक्षा को मानने वाले कुछ ही लोग हैं, जिस कारण मैं इस पाठ में बात करने के लिए इस पर समय नहीं दूंगा। सतत-ऐतिहासिक ढंग की कमज़ोरियों की चर्चा के लिए *ट्रथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 33 और 34 देखें। [2]प्रकाशितवाक्य में ''लड़ाई करना'' के और हवाले हैं, परन्तु उनमें से कोई भी यूनानी धर्मशास्त्र में ''लड़ाई'' की बात नहीं करता। [3]*ton polemon* वाक्यांश में *ton* अंग्रेजी के ''the'' के समान है। [4]''अपनी परेशानियों का दोष परमेश्वर के सिर मढ़ना'' पाठ में ''सातवां कटोरा'' का चित्र ''लड़ाई'' का विवरण भी है, जैसा कि अध्याय 16 में पहले बताया गया है। [5]''लघु पात्र'' उन्हें कहा गया है, जिन्हें नाटक में छोटी सी भूमिका दी जाती है (उन्हें कहने और/या करने के लिए ''छोटा'' सा काम दिया जाता है।) अजगर, पशु, झूठे भविष्यवक्ता, मेंढकों, राजाओं और सेनाओं को लगा था कि उन्हें बड़ा रोल मिलेगा, परन्तु प्रमुख भूमिका केवल *प्रभु* की थी। [6]अजगर और पशु दोनों के सात सिर थे, परन्तु दोनों के ''मुंह'' (एक ही) बताए गए हैं। हमें फिर याद दिलाया जाता है कि हम *दर्शन* देख रहे हैं न कि कोई वास्तविक शो। [7] कुछ लेखक सुझाव देते हैं कि मेंढकों ने मुंह से उगला। [8]यूहन्ना ने यह नहीं कहा कि दुष्ट आत्माएं मेंढक थे, परन्तु यह कहा कि वे मेंढकों *जैसे* थे। यह मान लिया जाता है कि दर्शन में वे मेंढकों से मिलते-जुलते थे (जिस कारण हमारे चित्र में तीन मेंढक दिखाए गए हैं), परन्तु हो सकता है कि ऐसा कदापि न हो। यूहन्ना के मन में आत्मा की कोई और विशेषता रही हो सकती है, जिससे उसके ध्यान में मेंढक आ गए। [9]लैव्यव्यवस्था 11 में विशेष रूप से मेंढक का उल्लेख नहीं है; परन्तु यदि इसे पृथ्वी का जन्तु माना गया था तो यह अशुद्ध था क्योंकि उसके न तो खुर फटे थे और न वह पागुर करता था। यदि इसे जल का जन्तु माना गया तो भी यह अशुद्ध था, क्योंकि न तो इसके पंख थे, न चोंयटे। [10]और टीकाकार केवल मेंढकों के घिनौने स्वभाव पर ज़ोर देते हैं, यहां तक कि आज भी मेंढकों को संसारभर में घृणित जीव माना जाता है। कुछ लेखकों ने लिखा है कि मेंढक विशेषकर समुद्री पशु *और* पृथ्वी के पशु के प्रतिनिधियों के रूप में काम करने के लिए उपयुक्त थे, क्योंकि वे जलस्थली (जो पृथ्वी और जल दोनों में रह सकते) हैं।

[11]वेस्ट प्वाइंट एक सुविधा है, जो अमेरिकी सेना के अधिकारियों को प्रशिक्षण देती है। अपने देश में ऐसी सुविधा हो तो इसका नाम बदल दें। [12]कर्मट अमेरिका में प्रसिद्ध मेंढक कठपुतली है, जो ''द मप्पेट शो'' नामक बच्चों के शिक्षात्मक मनोरंजन कार्यक्रम का एक भाग है। मेंढक के लिए ऐसा शब्द बदल लें, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [13]हां, मुझे मालूम है कि मेंढक वैसे ही हैं, जैसे परमेश्वर ने उन्हें बनाया था और वे परमेश्वर की संसार में अपनी जगह भरते हैं। मुझे यह भी मालूम हैं कि कुछ मेंढकों की टांगें मनुष्यों द्वारा खाई जाती है, यानी मेंढक प्रकृति में भोजन की कड़ी का भाग हैं, कुछ मेंढकों से उपयोगी विष निकाले

जाते हैं, और मेंढकों का इस्तेमाल अनुसंधान के लिए किया जाता है। मैं अपनी बात को समझाने के लिए नमक मिर्च लगाता हूं।[14]दुष्टात्माएं आत्माएं ही *हैं,* जिस कारण यह कहा गया है कि अधिक उपयुक्त अनुवाद ''शैतानी आत्माएं'' हो सकता है। फिलिप्स के अनुवाद (जे. बी. फिलिप्स, *द न्यू टैस्टामेंट इन मॉडर्न इंग्लिश*) में ''diabolical spirits'' अर्थात शैतानी आत्माएं हैं।[15]इसी पुस्तक में पहले आए पाठ ''वह बड़ा भरमाने वाला'' में 13:13-15 पर टिप्पणियां देखें।[16]अध्याय 17 संसार के अन्य हाकिमों पर रोम के प्रभाव पर ज़ोर देता है (17:2, 12, 13)।[17]डी. टी. नाइल्स, *ऐज़ सीइंग द इनविज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, 1961), 85.[18]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 192-93.[19]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 242.[20]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल इसे पिछले पाठ से जोड़े बिना प्रवचन के रूप में करना चाहें तो आपको आयत 15 पर टिप्पणी देनी चाहिए, जिसे मैंने पिछले पाठ में संक्षेप में बताया है। उस आयत में यह भी जोर दिया गया है कि योजनापूर्वक की गई लड़ाई का अन्त असफलता ही था।

[21]''आसानी से सांस लेना'' के लिए चिह्न, वर्ण-लोप चिह्न (') की तरह लगता है; ''रुक-रुककर सांस लेना'' उल्टे वर्ण लोप चिह्न की तरह लगता है।[22]''अरमगिद्दोन'' के शब्द जोड़ और अर्थ दोनों में एक समस्या है कि यह वचन में कहीं और नहीं मिलता और केवल प्रकाशितवाक्य में ही है।[23]''मगिद्दो'' के सही-सही अर्थ पर विवाद है। कइयों का विचार है कि इसका अर्थ ''दलों की जगह'' या ''कटने की जगह'' था।[24]जॉन डी. डेविस, *ए डिक्शनरी ऑफ़ बाइबल,* चौथा संशो. संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1956), 489.[25]अल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेज फ़ॉर ट्रब्लड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 91 में अनाम इतिहासकार को उद्धृत किया गया था। बाइबल में वर्णित स्थानों के अलावा मगिद्दो में कई महत्वपूर्ण लड़ाइयां लड़ी गई थीं (नेपोलियन बोनापार्ट भी एक लड़ाई में शामिल था), परन्तु उनका उल्लेख इसलिए नहीं हुआ क्योंकि यहां उनका महत्व नहीं लगता।[26]हैनरी बी.स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 209.[27]बाल्डिंगर, 90.[28]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 336[29]मगिद्दो नगर का नाम इसके निकटतम मैदानी क्षेत्र से लिया गया था।[30]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 216.

[31]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 301.[32]मौरिस, 193.[33]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 245.[34]एम. राबर्ट मुल्होलैंड, जूनि., *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एसबरी प्रैस, ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 271.[35]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''अपनी परेशानियों का दोष परमेश्वर के सिर मढ़ना'' में ''घुमाव'' पर नोट्स देखें।[36]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 376.[37]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 101.[38]प्रकाशितवाक्य में ''लड़ाई'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, जिस कारण आपके सुनने वालों के लिए ''कोई लड़ाई नहीं'' कहना उलझाने वाला हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बुराई की शक्तियां इकट्ठी तो ''लड़ाई'' करने की *मंशा* से ही हुई थीं, परन्तु यह लड़ाई हुई कभी नहीं। मुझे स्कूल के खेल के मैदान के कई ऐसे अवसर याद हैं, जब दो विद्यार्थी लड़ाई करने की तैयारी कर रहे थे, परन्तु शिक्षक ने बीच में आकर उन्हें रोक दिया। इस प्रकार वास्तव में कोई लड़ाई होती ही नहीं थी।[39]हेली, 336-37.[40]कॉफ़मैन, 376.

[41]रेअ समर्स, *वर्थी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 189.[42]रूबल शैली, *द लैंब एंड हिज़ एनिमीज़: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टवंट्यिथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन,

1983), 98. [43]अध्याय 16 भी हमें आश्वासन देता है कि *हमारे* शत्रुओं को प्रभु द्वारा पराजय मिलेगी। [44]कुछ लेखक आत्मिक लड़ाई की बात करते हैं, जिसमें हर व्यक्ति ''अरमगिद्दोन'' की तरह लगा हुआ है। उनके उद्देश्य (1) यह दिखाना कि अरमगिद्दोन पलिश्तीन की धरती पर होने वाली लड़ाई नहीं है; (2) यह जोर देना है कि वास्तव में आत्मिक लड़ाई का महत्व है न कि शारीरिक का; (3) इसे व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाना है। तौ भी ''अरमगिद्दोन'' जैसे *हमारे* संघर्ष की बात करने पर मुद्दा उलझ जाता है और मैं ऐसा करना पसन्द नहीं करता। कुछ लोग अपनी शर्तें तय करके ''आपका व्यक्तिगत अरमगिद्दोन'' और ''छोटा अरमगिद्दोन'' जैसे वाक्यांश इस्तेमाल करते हैं। इस बात में आपको अपनी समझ का इस्तेमाल करना है। [45]ओवन एल. क्राउच, *एक्सपोज़िटरी प्रीचिंग एंड टीचिंग: रैवलेशन* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 287. [46]डब्ल्यू बी.वेस्ट जूनि. *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासिस,* सं. बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 110. [47]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो अपने सुनने वालों को बताएं कि परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध कैसे बनाना है ताकि वह विजय पाने में उनकी सहायता कर सके। इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''ध्यान लगाए रखना'' में टिप्पणी 53 देखें। [48]वेस्ट, 110-13. [49]बाल्डिंगर, 92-94.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रकाशितवाक्य में ''लड़ाई'' के कितने विवरण मिलते हैं? पुस्तक में ऐसी कितनी ''लड़ाइयों'' का वर्णन है?
2. आपको क्यों लगता है कि तीन अशुद्ध आत्माओं को ''मेंढकों की तरह'' बताया गया है? (क्या आपको मेंढक अच्छे लगते हैं?)
3. मेंढकों ने ''लड़ाई'' (अर्थात युद्ध) के लिए जातियों को इकट्ठा कर लिया, परन्तु यह लड़ाई किसकी थी? यह किसकी शर्तों पर लड़ी जानी थी?
4. कुछ अनुवादक ''अरमगिद्दोन'' और अन्य ''हर-मगिदोन'' क्यों लिखते हैं?
5. ''हर-मगिदोन'' का सम्भावित अर्थ क्या है?
6. क्या आप ग्लोब पर ''मगिद्दो पहाड़'' नामक कोई जगह ढूंढ़ सकते हैं?
7. मगिद्दो क्यों प्रसिद्ध था? आपको क्यों लगता है कि ''मगिद्दो पहाड़'' उस जगह की पहचान के लिए इस्तेमाल होता था, जहां शैतानी सेना इकट्ठी हुई थी?
8. सेना के इकट्ठा होने पर क्या हुआ? क्या अध्याय 16 सचमुच की लड़ाई के बारे में बताता है? क्या अध्याय 19 या 20 बताता है?
9. क्या बाइबल भविष्य में उत्तरी पलिश्तीन में मनुष्यों के बीच में लड़ी जाने वाली किसी सांसारिक लड़ाई के बारे में *कुछ* कहती है?
10. हमें किस लड़ाई की चिंता होनी चाहिए?

तीन अशुद्ध आत्माओं जैसे मेंढक (16:13)